श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति सा विद्या या विमुक्तये सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ ८

शहर जनवरी - २०२२

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

क्र.	उत्तर
(१)	दुष्कर
(२)	मुमुक्षु
(३)	स्वलिंग
(४)	आत्मा
(५)	शोभन
(६)	काश्यप
(७)	गुरुवंदन
(८)	अज्ञानरूप
(९)	आत्मरमणता
(१०)	इमली
(११)	देवसिअं
(१२)	विकथा
(१३)	धार्मिक
(१४)	दर्शनावरणीय
(१५)	विद्याधरों
(१६)	गुणानुराग
(१७)	पुण्य
(१८)	अन्तर्मुहूर्त
(१९)	सुकाल
(२०)	प्रत्येक

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

क्र.	उत्तर
(१)	द्वादशावर्तवंदन
(२)	अन्तराय कर्म
(३)	सज्जन
(४)	मनःपर्यवज्ञान
(५)	जमाली
(६)	जिनशासन
(७)	भोजन
(८)	ओढासना
(९)	इच्छकार
(१०)	मेरु पर्वत
(११)	अजिन
(१२)	सुपक्ष
(१३)	द्रव्यतप
(१४)	रोहिणी
(१५)	प्रायश्चित

प्रश्न-३ शब्दार्थ

क्र.	उत्तर
(१)	अप्रीतिभाव
(२)	उपेक्षा
(३)	योजन
(४)	मस्तक/ललाट
(५)	संक्षेप में
(६)	छोडे हुए
(७)	मंदिर
(८)	स्वभाव
(९)	वेदनीय
(१०)	जानते है
(११)	ये
(१२)	कुम्भार
(१३)	जानना
(१४)	रजोहरण
(१५)	विनय
(१६)	तथा
(१७)	बाह्य
(१८)	सूक्ष्म
(१९)	रत्नप्रभा
(२०)	सागरोपम

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

क्र.	उत्तर	क्र.	उत्तर
(१)	५	(६)	१०
(२)	९	(७)	२
(३)	७	(८)	१
(४)	८	(९)	४
(५)	३	(१०)	६

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

क्र.	उत्तर
(१)	३६
(२)	४
(३)	१५८
(४)	१०८
(५)	१२
(६)	५६
(७)	११
(८)	२५०
(९)	३०
(१०)	१८

क्र.	प्रश्न-६ ✓ या ×	क्र.	प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	९
(२)	×	(२)	२३
(३)	✓	(३)	१३
(४)	×	(४)	६
(५)	✓	(५)	२
(६)	✓	(६)	६
(७)	×	(७)	१७
(८)	×	(८)	८
(९)	✓	(९)	२
(१०)	×	(१०)	२१

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ११ नं० का उत्तर छूट जाने से उसे अन्त में लिया है ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. प्रभु महावीर के पिता का नाम सिध्दार्थ राजा और माता का नाम त्रिशला राणी था। प्रभु के पत्नी का नाम यशोदा था। उन्हे प्रियदर्शना नामक पुत्री हुई उसका विवाह प्रभु ने अपने बहन के पुत्र जमाली के साथ करवाया। उन्हे शेषवती नामक पुत्री हुई। प्रभु को एक बडे भाई नंदीवर्धन और सुदर्शना नामक बहन थी। प्रभु को सुपार्श्व नामक काका थे।

२. इच्छकार सूत्र बोलकर सबेरे या दिन मे किसीभी वक्त गुरु वंदन करते है. वंदन करने के ३ प्रकार है। फिट्टा वंदन, थोभ वंदन, द्वादशावर्त मत्थएण वंदामि बोलने पूर्वक दो हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर वंदन करना इसे फिट्टा वंदन कहते है। खमासमण सूत्र बोलकर २ हाथ, २ घुटने, और मस्तक ये ५ अंग भूमि को स्पर्श कर वंदन करते है, इसे थोभवंदन कहते है दो वक्त वांदणा सूत्र बोलने पूर्वक बारह आवर्त से जो वंदन करते है उसे द्वादशावर्त वंदन करते है।

३. हम दुनिया को जिस दृष्टी से देखते है हमे वह वैसि ही दिखती है। हमे लोगों के दोष देखने की आदत हो तो हमे गुण कभी दिखाई नही देंगे। अगर हम दुसरों के गुणोंको ही पहचाने और खुद के दोषों को सुधारे तो हमारा जीवन बदल जायेगा। यह किस व्यक्ती का दोष नही तो दृष्टी का दोष है। इसलीये हमे हमारी दृष्टी, या दृष्टीकोन बदलना चाहिये और अन्य के गुण और स्व के दोष देखने चाहीये.

४. जो जीव संसार से मुक्त हुये है उनके सभी कार्य सिध्द हो गये है ऐसे सिध्द जीवों के पंद्रह भेद है. १) जिन सिध्द २) अजिन सिध्द ३) तीर्थ ४) अतीर्थ ५) गृहस्थ ६) अन्यलिंग ७) स्वलिंग ८) स्त्रीलिंग ९) पुरुषलिंग १०) नपुंसक लिंग ११) प्रत्येकबुध्द १२) स्वयंबुध्द १३) बुध्दबोधित १४) एक सिध्द १५) अनेक सिध्द - इसका अर्थ एक समय में अनेक मोक्ष मे जाय वो अनेक सिध्द उदा. ऋषभ देव. जिन सिध्द यानी तीर्थंकर बन कर मोक्ष मे जाये उदा - पार्श्वनाथ तीर्थ सिध्द यानी तीर्थ चालू हो और मोक्ष में जाये वो तीर्थ सिध्द उदा. जंबुस्वामी

५. बाह्य तप के ६ प्रकार में से संलीनता तप यानी अशुभ मार्ग मे प्रवर्तित मन वचन और काया को अशुभ से पीछे हटाकर शुभ में प्रवर्तित करना. वह सलीनता तप है। अभ्यंतर तप के छट्टे प्रकार कायोत्सर्ग के २ प्रकार है द्रव्य और भाव उत्सर्ग. कषाय, मिथ्यात्व कर्म आदि का त्याग करना वह भाव उत्सर्ग है। बंध के समय आत्मा के साथ चार बाते होती है. उसमे कर्म के बंध समय रस मे मंदता, तीव्रता, तीव्रतरता, तीव्रतमता देखने मिलती है